

PRESS RELEASE- ANNOUNCEMENT OF LAUNCHING OF 'TARAGIRI'

The first quarter for Mazagon Dock Shipbuilders Ltd (MDL) kick started with the launch of two frontline warships namely Udaygiri- the second Stealth Frigate of Nilgiri Class and Surat- the fourth Missile Destroyer of Visakhapatnam class. The second quarter will be marked by the launching of the third ship of Project 17A 'Taragiri'. This will mark yet another major milestone for MDL in the current financial year. Yard 12653, Taragiri is scheduled to be launched on 11 Sep 2022.

This ship has been built using Integrated construction methodology which involves hull blocks construction in different geographical locations and integration/erection on Slipway at MDL. The keel of Taragiri was laid on 10 Sep 2020 and is expected to be delivered by August 2025. The vessel will be launched with a launch weight of approximately 3510 Tons. The ship is designed by the Indian Navy's in-house design organization viz. Bureau of Naval Design. MDL is carrying out the detailed design & construction which is overseen by Warship Overseeing Team (Mumbai).

The 149.02 M long & 17.8 M wide ship, propelled by a CODOG combination of two Gas Turbines and 02 Main Diesel Engines which are designed to achieve a speed of over 28 knots at a displacement of approx. 6670 Tons. The steel used in Hull construction of P17A frigates is indigenously developed DMR 249A which is a low carbon micro alloy grade steel manufactured by SAIL. This indigenously designed stealth Frigate will have state-of-the-art weapons, sensors, an advanced action information system, an integrated platform management system, world class modular living spaces, sophisticated power distribution system and a host of other advanced features. It will be fitted with supersonic surface-to-surface

missile system. The ship's air defence capability, designed to counter the threat of enemy aircraft and anti-ship cruise missiles will revolve around the vertical launch and long range surface to air missile system. Two-30 mm rapid-fire guns will provide the ship with close-in-defence capability while an SRGM Gun will enable her to provide effective naval gunfire support. Indigenously developed triple tube light weight torpedo launchers and rocket launchers will add punch to the ship's anti-submarine capability.

The indigenous content in P17A frigate is approx. 75% which is a notch above its predecessors P17 Shivalik class Ships. The ship will be integrated with large number of indigenous equipment and machinery sourced from major industrial houses in the country as well as over 100 MSMEs. Indigenization efforts received a renewed thrust with the 'Make in India' policy, of the Government leading to development of ancillary industries along with generation of employment opportunities both locally as well as pan India and thereby strengthening the economy. With this launch we are reiterating our firm commitment to the continued development of our indigenous warship-building capability. The fact that this ship is designed and is being constructed in India amply encapsulates our commitment to indigenization in our quest for strategic autonomy, an imperative for any national power of relevance.

The Shipyard had modernized its infrastructure and facility for undertaking Integrated Construction and have also implemented several technology components of Industry 4.0 notably, the Product Data Management (PDM) / Product Lifecycle Management (PLM), Virtual Reality Lab (VRL) and Augmented Reality for inspections. With these enablement, MDL presently has an aggregate capacity to build 10 Capital Warships and 11 Submarines simultaneously.

तारागिरि जलावतरण

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) के लिए पहली तिमाही की शुरुआत में दो फ्रंटलाइन युद्धपोतों उदयगिरि, नीलगिरि श्रेणी के दूसरे स्टील्थ फ्रिगेट और सूरत, विशाखापत्तनम श्रेणी के चौथे मिसाइल डिस्ट्रॉयर के लॉन्चिंग के साथ हुई। दूसरी तिमाही में परियोजना 17ए 'तारागिरि' के तीसरे पोत की लॉन्चिंग के साथ चिह्नित किया जाएगा। यह चालू वित्त वर्ष में एमडीएल के लिए एक और बड़ा मील का पत्थर साबित होगा। यार्ड 12653, तारागिरि को 11 सितंबर 2022 को लॉन्च किया जाना है।

इस पोत को एकीकृत निर्माण पद्धति का उपयोग करके बनाया गया है जिसमें विभिन्न भौगोलिक स्थानों में हल ब्लॉक निर्माण और एमडीएल में स्लिपवे पर एकीकरण / निर्माण शामिल है। तारागिरि की कील 10 सितंबर 2020 को रखी गई थी और अगस्त 2025 तक इसे भारतीय नौसेना को सुपुर्द करने की उम्मीद है। पोत को लगभग 3510 टन के वजन के साथ लॉन्च किया जाएगा। पोत को भारतीय नौसेना के इन-हाउस डिजाइन संगठन, नौसेना डिजाइन निदेशालय द्वारा डिजाइन किया गया है। एमडीएल विस्तृत डिजाइन और निर्माण कार्य कर रहा है, जिसकी देखरेख युद्धपोत अधिदर्शी दल (मुंबई) द्वारा किया जाता है।

दो गैस टर्बाइनों द्वारा संचालित 149.02 मीटर लंबा और 17.8 मीटर चौड़ा पोत लगभग 6670 टन का विस्थापन पर 28 समुद्री मील से अधिक की गति प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पी17ए फ्रिगेट के हल निर्माण में प्रयोग किया जाने वाला स्टील स्वदेशी रूप से विकसित डीएमआर 249ए है जो सेल द्वारा निर्मित लो कार्बन माइक्रो एलॉई ग्रेड स्टील है। स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए इस स्टील्थ फ्रिगेट में अत्याधुनिक हथियार, सेंसर, उन्नत कार्रवाई सूचना प्रणाली, एकीकृत मंच प्रबंधन प्रणाली, विश्व स्तरीय मॉड्यूलर रहने की जगह, परिष्कृत बिजली वितरण प्रणाली और कई अन्य उन्नत सुविधाएं होंगी। इसे सतह से सतह

पर मार करने वाली सुपरसोनिक मिसाइल प्रणाली से लैस किया जाएगा। दुश्मन के विमानों और एंटी-शिप क्रूज मिसाइलों के खतरे का मुकाबला करने के लिए डिज़ाइन की गई जहाज की

वायु रक्षा क्षमता वर्टिकल लॉन्च और लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली के आस-पास घूमेगी। दो-30 मिमी रैपिड-फायर गन जहाज को क्लोज-इन-डिफेंस क्षमता प्रदान करेगी जबकि एसआरजीएम गन उसे प्रभावी नौसैनिक बंदूक सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाएगी। स्वदेशी रूप से विकसित ट्रिपल ट्यूब लाइट वेट टॉरपीडो लॉन्चर और रॉकेट लॉन्चर जहाज की पनडुब्बी रोधी क्षमता में पंच जोड़ देंगे।

पी17ए में फ्रिगेट में स्वदेशी सामग्री लगभग 75% हैं जो अपने पूर्ववर्तियों P17 शिवालिक श्रेणी के जहाजों से एक पायदान ऊपर है। जहाज को देश के प्रमुख औद्योगिक घरानों के साथ-साथ 100 से अधिक एमएसएमई से प्राप्त बड़ी संख्या में स्वदेशी उपकरणों और मशीनरी के साथ एकीकृत किया गया है। स्वदेशीकरण के प्रयासों को सरकार की 'मेक इन इंडिया' नीति के साथ नए सिरे से जोर मिला, जिससे स्थानीय और साथ ही अखिल भारतीय स्तर पर रोजगार के अवसरों के सृजन के साथ-साथ सहायक उद्योगों का विकास हुआ और इस तरह अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। इस लॉन्च के साथ हम अपनी स्वदेशी युद्धपोत-निर्माण क्षमता के निरंतर विकास के लिए अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता दोहरा रहे हैं। तथ्य यह है कि यह जहाज भारत में डिज़ाइन किया गया है और इसका निर्माण किया जा रहा है, सामरिक स्वायत्तता के लिए हमारी खोज में स्वदेशीकरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, प्रासंगिकता की किसी भी राष्ट्रीय शक्ति के लिए अनिवार्य है।

शिपयार्ड ने एकीकृत निर्माण करने के लिए अपने बुनियादी ढांचे और सुविधा का आधुनिकीकरण किया था और उद्योग 4.0 के कई तकनीकी

घटकों को भी लागू किया है, विशेष रूप से उत्पाद डेटा प्रबंधन (पीडीएम) /उत्पाद जीवनचक्र प्रबंधन (पीएलएम), वर्चुअल रियलिटी लैब (वीआरएल) और निरीक्षण के लिए संवर्धित वास्तविकता। इन सक्षमताओं के साथ, एमडीएल के पास वर्तमान में एक साथ 10 कैपिटल वॉरशिप और 11 सबमरीन बनाने की कुल क्षमता है।

